फेमिनिज़्म

के. वनजा

फेमिनिज़्म

फेमिनिज़्म

के. वनजा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023
पुनर्मुद्रण : 2025

ISBN 978-81-19019-44-1

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
राधेश्याम

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

FEMINISM
Critical Analysis ***by K. Vanja***

अपनी तरफ से

"फेमिनिज़्म' वह शब्द सुनते ही कुछ लोगों के होंठों पर हँसी आती है। यह हँसी खुशी की नहीं बल्कि परिहास की है। लेकिन इसके सूक्ष्म एवं गहरे अर्थ को जो पहचानता है वह चिन्तित होने लगता है। जो स्त्री अपने अधिकार के प्रति सजग है वह उसके लिए लड़ने लगती है। वह किससे लड़ती है? सत्ता, ज्ञान एवं धर्म कन्धे-से-कन्धे मिलने पर समूह जितना भी बड़ा हो उसको पूर्णत: दबाकर उसे सभी प्रकार के स्वातन्त्र्य एवं अधिकार से वंचित किया जा सकता है। दुनिया की आधी आबादी की स्त्रियों के ऊपर इस अधिकार की राजनीति काम करती आ रही है। इससे सजग स्त्री शताब्दियों से लड़ती आ रही है। इसलिए फेमिनिज़्म में निहित इस गहरे अर्थ को समझना अनिवार्य है। यह लिंग, वर्ण, वर्ग, जाति, नस्ल आदि सभी प्रकार के विभाजन से असहमति दर्ज करता है।

फेमिनिज़्म सम्बन्धी कई किताबें हिन्दी में हैं। लेकिन व्यवस्थित रूप से उसके इतिहास को रेखांकित करने की ज़रूरत मैंने महसूस की। इसके परिणामस्वरूप पाश्चात्य फेमिनिज़्म के अभी तक के संक्षिप्त इतिहास, भारतीय स्त्री-जागरण, फेमिनिज़्म के साहित्यिक स्वरूप, समीक्षा, भाषा तथा उसके मुख्य प्रकारों को प्रकाश में लाने की विनम्र कोशिश इस 'फेमिनिज़्म' शीर्षक पुस्तक में है। इको-फेमिनिज़्म, लेसबियनिज़्म जैसे अनछुए पहलुओं को हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में विचार किया गया है। इस प्रकार इसे अत्यन्त नवीनता से प्रस्तुत कर पाठकों एवं साहित्यिक जिज्ञासुओं की कुतूहलता को उत्तेजित करना इस किताब का मकसद रहता है। यानी कि फेमिनिज़्म में निहित जो राजनीति है वह सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ की है। वह बहुलता की संस्कृति को प्रोत्साहित करती है। आज की अनिवार्यता स्त्री और प्रकृति केन्द्रित संस्कृति की है। फेमिनिज़्म के इस बुनियादी स्वर को प्रतिष्ठा दिलाने के गुरू गम्भीर दायित्व की पहचान है यह किताब।

असल में यह पुस्तक रूपायित करने के पीछे मेरे मित्र एन. मोहनन जी की प्रेरणा है। उनके प्रति मेरी कृतज्ञता शब्दातीत है।

इस पुस्तक के प्रकाशक अनुज्ञा बुक्स के सुधीर वत्स जी के प्रति भी मैं सीमातीत कृतज्ञता एवं स्नेह प्रकट करती हूँ।

के. वनजा

विषय सूची

अपनी तरफ से 5

1. फेमिनिज़्म 9
2. भारत में स्त्री जागरण और आन्दोलन 31
3. समाजवादी नारीवाद 49
4. इको-फेमिनिज़्म और हिन्दी साहित्य 67
5. लेस्बियनिज़्म और साहित्य 92
6. स्त्री-भाषा और समीक्षा 124
7. हिन्दी की स्त्रीवादी आलोचना 145
8. उत्तर समय में स्त्री : प्रभा खेतान की चिन्तनपरक रचनाओं के विशेष सन्दर्भ में 159
9. हिन्दी का स्त्री यात्रा-साहित्य 166
10. शकुन्तिका : स्त्री की सचेतनता की दास्तान 173
11. समकालीन स्त्री-पक्ष कविता का दक्षिण भारतीय परिप्रेक्ष्य 181
12. स्वातन्त्र्योत्तर मलयालम स्त्री-कविता 196
13. मलयालम भाषा की केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार जेत्री कथाकार 201

फेमिनिज़्म

मनुष्य-वंश में जन्म लेने पर भी इसके आधा भाग द्वारा सामना की जाने वाली असमानता, असन्तुष्टि एवं अनीतियों के जंजीरों को तोड़ देने पर प्राप्त नया आकाश और नयी भूमि है फेमिनिज़्म का निहितार्थ। यह स्त्री-भाव में लीन वर्गीय, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक अर्थ है। फेमिनिज़्म की विस्तृत सीमा में पुरुषाधिपत्य के खिलाफ की जाने वाली नैतिक एवं सांस्कृतिक स्त्री-पक्ष प्रवृत्तियाँ दर्ज हैं। साहित्य इसकी एक कड़ी मात्र है। फेमिनिस्ट की जगह (Space) लेखन का क्षेत्र ही नहीं बल्कि जहाँ-जहाँ स्त्रियों की उपेक्षा होती है वहाँ-वहाँ वे प्रवेश करते हैं। पहले सारे स्पेस पुरुष के थे और अब स्त्री भी सारे स्पेसों में प्रवेश कर चुकी है। आज वह अपनी जगह पर खड़े होकर अपनी अस्मिता एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए लड़ती है। यह संज्ञा काल, देश एवं वर्ग के अतीत बनकर ठोस आशय एवं विचार का सिद्धान्त है। यह मनुष्य के विमोचन का आशय है। इस सन्दर्भ में इतिहास की अनुसन्धाता मरियम प्नेर का विचार ध्यातव्य है कि "मनुष्य के विमोचन के लिए आवश्यक बुनियादी घटकों में एक है फेमिनिज़म।"

Oxford English Dictionary में फेमिनिज़्म के लिए जो अर्थ दिया गया है वह यों है 'उन्नीसवीं शती के मध्य भाग में योरोप में स्त्रियों के अधिकारों के लिए शुरू हुए अभिभाषण।" 'फेमिनिस्ट' शब्द सबसे पहले प्रयुक्त होकर दिखाई पड़ा 1895 अप्रैल 25 की 'अत्तेन्वम' शीर्षक पत्रिका में। अर्थ है कि 'अपने स्वातन्त्र्य को लड़कर वापस लाने में समर्थ स्त्री।" ऐतिहासिक दृष्टि से 'फेमिनिज़्म' शब्द का स्रोत योरोपीय नवोत्थान से प्राप्त 'ज्ञानोदय' (Enlightenment) से है। इसलिए ही इस शब्द में जो आशय है इसमें एक पाश्चात्य बुर्जुआ की गन्ध है। इस दृष्टि से बाद के कई प्रगतिशील स्त्री आन्दोलनों की प्रवृत्तियों ने इस शब्द के अर्थ को प्रदूषित कर दिया। इसी को आधार मानकर सोवियेट कम्युनिस्ट पार्टी के महिला विभाग की नेता अलक्सांड्रा कोलोंटैन जैसी स्त्रियों ने पूर्णत: इस शब्द को नकारा। भारतीय स्त्री आन्दोलन की कुछ सदस्यायें जो साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेकर लड़ रही थीं, उन्होंने भी फेमिनिज़्म लेबल में अपने को व्याख्यायित करना नहीं चाहा। काले वर्ग की स्त्रियों